

## अग्निहोत्र

### परिवार के सुख, समृद्धि और स्वास्थ्य के लिए प्रतिदिन अग्निहोत्र

आज हमारे चारों ओर का वातावरण अत्यंत दूषित हो गया है। जब हम प्रदूषण की बात करते हैं, तो सामान्यतः हम वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, भोजन प्रदूषण और भूमि प्रदूषण के विषय में विचार करते हैं। परन्तु यह प्रदूषण भौतिक स्तर तक ही सीमित नहीं है, अपितु वायुमंडल में उत्सर्जित मानसिक तथा आध्यात्मिक प्रदूषण भी सम्मिलित है।

मानसिक प्रदूषण लोगों के नकारात्मक विचार जैसे लालच, धोखा, घृणा, विनाश हेतु योजना बनाना इत्यादि के कारण होता है। यह मानसिक प्रदूषण वातावरण में प्रसारित होता है, इसलिए यह हमारे मन के नकारात्मक विचारों को बढ़ाने वाला वातावरण बना देता है।

#### अग्निहोत्र क्या है ?

अग्निहोत्र एक वैदिक हवन पद्धति है। वर्तमान में जब सम्पूर्ण विश्व इस प्रकार के भौतिक प्रदूषण पर शीघ्र ही रोक लगाने हेतु उपाय ढूंढने हेतु प्रयत्नशील है। पवित्र अथर्ववेद (11:7:9) में एक सरल धार्मिक विधि का उल्लेख है। जिसका विस्तृत वर्णन यजुर्वेद संहिता और शतपथ ब्राह्मण (12:4:1) में है। इससे प्रदूषण में कमी आएगी तथा वातावरण भी आध्यात्मिक रूप से शुद्ध होगा। जो व्यक्ति यह पवित्र अग्निहोत्र विधि करते हैं, वे बताते हैं कि इससे तनाव कम होता है, शक्ति बढ़ती है तथा मानव को अधिक स्नेही बनाती है। ऐसा माना जाता है कि अग्निहोत्र पौधों में जीवन शक्ति का पोषण करता है तथा हानिकारक विकिरण और रोगजनक जीवाणुओं को उदासीन बनाता है। जल संसाधनों की शुद्धि हेतु भी इसका उपयोग किया जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि यह नाभिकीय विकिरण के दुष्प्रभावों को भी न्यून कर सकता है। वर्तमान प्रदूषित वातावरण में वायु की



शुद्धता तथा विषैली वायु और विकिरण से रक्षा करनेवाली 'अग्निहोत्र' विधि अवश्य करें। पर्यावरण की शुद्धि के लिए किए जाने वाले अग्निहोत्र को आज कई लोग सीखकर अपने घरों में भी करने लगे हैं। अग्निहोत्र एक ऐसी हवन पद्धति है जिसमें समय भी कम लगता है तथा इससे आसानी से किया भी जा सकता है। इस संसार में ईश्वर ने हमें सब कुछ प्रदान किया है, कृतज्ञता

स्वरूप में प्रतिदिन अग्निहोत्र करने के लिए समय निकालना चाहिए। इस यज्ञ को स्वयं करना करना चाहिए व अन्यो को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

#### अग्निहोत्र के लाभ

अग्निहोत्र से वनस्पतियों को वातावरण से पोषण द्रव्य मिलते हैं और वे प्रसन्न होती हैं। अग्निहोत्र के भस्म का भी कृषि और वनस्पतियों की वृद्धि पर उत्तम परिणाम होता है। परिणामस्वरूप अधिक पौष्टिक और स्वादिष्ट अनाज, पल, फूल और सब्जियों की उपज होती है तथा चैतन्यप्रदायी और औषधीय वातावरण उत्पन्न होता है। अग्निहोत्र के लाभ का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण उदाहरण है, भोपाल में दिसम्बर 1984 में हुई गैस त्रासदी। इसमें लगभग 15,000 से अधिक लोगों की जान चली गई और कई लोग शारीरिक अपंगता से लेकर अंधेपन के भी शिकार हुए, तबाही की इस काली रात में हजारों परिवार के बीच भोपाल में कुशवाहा परिवार भी था। कुशवाहा परिवार में प्रतिदिन सुबह और शाम अग्निहोत्र यज्ञ होता था। इसलिए उस काली रात में भी कुशवाहा परिवार ने अग्निहोत्र यज्ञ करना जारी रखा। इसके बाद लगभग 20 मिनट के अंदर ही उनका घर और उसके आसपास का वातावरण 'मिथाइल आइसो साइनाइड गैस' से मुक्त हो गया।

# अग्निहोत्र

## अग्निहोत्र का महत्त्व

अग्निहोत्र महत्त्वपूर्ण हवन यज्ञ है और इसे प्राचीन काल से महत्त्व दिया जाता आया है। इसका महत्त्व विभिन्न

पहलुओं से प्रकट होता है—

### 1. आध्यात्मिक महत्त्व

— अग्निहोत्र को आध्यात्मिकता के प्रतीक के रूप में मान्यता दी जाती है। यह यज्ञ, मन, शरीर, और आत्मा के त्रिवेणी संयोग को प्रदर्शित करता है और अध्यात्मिक उन्नति को प्रोत्साहित करता है।

### 2. सामाजिक महत्त्व

— अग्निहोत्र परिवार की एकता, सामंजस्य, और संगठनशीलता को बढ़ाता है। इसे परिवार की सदस्यों द्वारा साझा किया जाता है और इसे उन्नति, समृद्धि और शांति की प्रार्थना के रूप में मान्यता दी जाती है।

### 3. प्राकृतिक महत्त्व

— अग्निहोत्र प्रकृति के साथ संबंधित होता है। हवन के द्वारा जल, वायु, और पृथ्वी आदि प्राकृतिक तत्वों की प्रशंसा और संरक्षण की भावना प्रकट की जाती है।

### 4. कल्याणकारी महत्त्व

— अग्निहोत्र के माध्यम से प्रार्थना और यज्ञ करने से व्यक्ति और समाज के कल्याण की प्राप्ति होती है, जो शारीरिक, मानसिक, और आध्यात्मिक स्तर पर होती है।

## अग्निहोत्र करने का तरीका

हवन पात्र के तल में उपले का एक छोटा टुकड़ा रखें। उस पर उपले के टुकड़ों को देशी गाय का घी लगाकर उन्हें इस प्रकार रखें (उपलों के सीधे-आड़े टुकड़ों की 2-3 परतें) कि भीतर की रक्ति में वायु का आवागमन हो सके। पश्चात उपले के एक टुकड़े को घी लगाकर उसे प्रज्वलित करें तथा हवन पात्र में रखें। मंत्रोच्चारण करें।

## अग्निहोत्र वैज्ञानिक है

अग्निहोत्र एक जैव-ऊर्जा विज्ञान है जिसे धूमन की प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया जा सकता है। अग्नि होत्र के दौरान उपयोग की जाने वाली सामग्री दहन के दौरान जल जाती है और परिवेश के वातावरण में कई गैसीय यौगिकों को विकसित करती है।

## अग्निहोत्र हवन प्रदूषण मुक्त करता है

अग्निहोत्र दिन में दो बार किया जाता है जब दिन और रात लगभग चौबीस घंटे के अंतराल पर आवर्ती सर्कैडियन



जैविक चक्रों के अनुरूप होते हैं, जो मानव शरीर में एक चबुंकीय परिवर्तन लाते हैं। यह तथ्य कि अग्निहोत्र प्रदूषण को दूर करता है, वैज्ञानिकों द्वारा तेजी से पहचाना जा रहा है।

## अग्निहोत्र हवन स्वास्थ्य के लिए अच्छा है

अग्निहोत्र हवा और परिवेश को शुद्ध करने में मदद करता है। इस प्रक्रिया में उपयोग

किया जाने वाला तांबे का पिरामिड पॉट नकारात्मक आयन उत्पन्न करता है, और विभिन्न खतरनाक कणों को हवा से साफ करने में मदद करता है। इसके अलावा, गाय का गोबर और शुद्ध घी प्राकृतिक कीटाणुनाशक के रूप में कार्य करते हैं और हवा और आस पास में बैक्टीरिया और विषाक्तता को कम करते हैं।

## अग्निहोत्र के स्वास्थ्य फायदे

इसके अलावा, व्यक्तिगत स्वास्थ्य पर अग्निहोत्र या होमा के कई लाभ हैं जैसे— खराब कोलेस्ट्रॉल के स्तर में कमी, अस्थमा में कमी, सांस लेने की अन्य समस्याएं, मनोवैज्ञानिक समस्याएं, शराब, तम्बाकू आदि से नशामुक्ति भी संभव हुई।

## अग्निहोत्र का कृषि में महत्त्व

1. **मृदा को पोषण** — अग्निहोत्र में उपयोग होने वाली विभिन्न सामग्री जैसे— गोमय, घृत, और हवन सामग्री मृदा को पोषित करती हैं। इससे मृदा की गुणवत्ता बढ़ती है, पोषक तत्वों का संतुलन बना रहता है, और उपजाऊता में सुधार होता है।

2. **फसल की सुरक्षा** — अग्निहोत्र के द्वारा उत्पन्न होने वाले धूप, धारी, और वायु के प्रभाव से कीटों, रोगों, और पशु-पक्षियों के प्रकोप का संकट निवारण होता है। इससे फसलों की सुरक्षा बढ़ती है और उनकी प्रवृद्धि होती है।

3. **जल संचय** — अग्नि होत्र में उपयोग होने वाला जल पवित्र होता है। इसे कृषि के लिए उपयोग किया जा सकता है, जिस से जल संचय होता है। इसके माध्यम से जल की उपयोगिता बढ़ती है और पानी की बचत होती है।

4. **उर्वरक** — अग्निहोत्र में उपयोग होने वाली हवन सामग्री उर्वरक के रूप में उपयोगी होती है। यह पृथ्वी को उपजाऊ बनाने के लिए विभिन्न पोषक तत्वों का प्रदान करती है और मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार करती है।

इन सभी कारणों से अग्निहोत्र कृषि में महत्त्वपूर्ण योगदान करता है और किसानों को उनकी उपजाऊता को बढ़ाने में सहायता प्रदान करता है।

## देशी गाय का घी - महत्व एवं उपयोग

रूसी वैज्ञानिक शिरोविच ने देशी गाय के घी पर खोज की है। गाय का घी और चावल की आहुति डालने महत्वपूर्ण गैसें जैसे - एथिलीन ऑक्साइड, प्रोपिलीन ऑक्साइड, फॉर्मलडीहाइड आदि उत्पन्न होती हैं। इथिलीन ऑक्साइड गैस आजकल सबसे अधिक प्रयुक्त होने वाली जीवाणुरोधक गैस है, जो शल्य-चिकित्सा से लेकर जीवनरक्षक औषधियाँ बनाने तक में उपयोगी हैं। वैज्ञानिक प्रोपिलीन ऑक्साइड गैस को कृत्रिम वर्षा का आधार मानते हैं।

### गौघृत में मनुष्य

शरीर में पहुँचे रेडियोधर्मी विकिरण का दुष्प्रभाव नष्ट करने की असीम क्षमता है। अग्नि में गाय का घी कि आहुति देने से उसका धुआँ जहाँ तक फैलता है, वहाँ तक का सारा वातावरण प्रदूषण और आण्विक विकरणों से मुक्त हो जाता है। सबसे आश्चर्यजनक बात तो यह है कि एक चम्मच गौघृत को अग्नि में डालने से एक टन प्राण वायु (ऑक्सीजन) बनती है जो अन्य किसी भी उपाय से संभव नहीं है।

देशी गाय के घी को रसायन कहा गया है जो जवानी को कायम रखते हुए, बुढ़ापे को दूर रखता है। देशी गाय का घी खाने से बूढ़ा व्यक्ति भी जवान जैसा हो जाता है। गाय के घी में स्वर्णक्षार पाए जाते हैं जिसमें अद्भुत औषधीय गुण होते हैं, जो कि गाय के घी के अलावा अन्य घी में नहीं मिलते। देशी गाय के घी में वैक्सीन एसिड, ब्यूट्रिक एसिड, बीटा-कैरोटीन जैसे माइक्रोन्यूट्रीएट्स मौजूद होते हैं। जिसके सेवन करने से कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से बचा जा सकता है। गाय के घी से उत्पन्न शरीर के माइक्रोन्यूट्रीएट्स में कैंसर युक्त तत्वों से लड़ने की क्षमता होती है। यदि आप गाय के 10 ग्राम घी से हवन अनुष्ठान (यज्ञ) करते हैं तो इसके परिणाम स्वरूप वातावरण में लगभग 1 टन ताजा ऑक्सीजन का उत्पादन कर सकते हैं। यही कारण है कि मंदिरों में गाय के घी का दीपक जलाने कि तथा धार्मिक समारोह में यज्ञ करने कि प्रथा प्रचलित है। इससे वातावरण में फैले परमाणु विकिरणों को हटाने की अद्भुत क्षमता होती है।

### गाय के घी के महत्वपूर्ण उपयोग-

- मासिक स्राव में किसी भी तरह की गड़बड़ी में 250 ग्राम गर्म पानी में (घी पिघला हो तो 3 चम्मच जमा हुआ हो तो 1 चम्मच) डालकर पीने से लाभ होगा। यह पानी मासिक स्राव वाले दिनों के दौरान ही पीना है।
- गाय का घी नाक में डालने से एलर्जी खत्म हो जाती है, ये दुनिया की सारी दवाइयों से तेज असर दिखाता है।
- गाय का घी नाक में डालने से कान का पर्दा बिना आपरेशन के ठीक हो सकता है।
- नाक में घी डालने से नाक की खुश्की दूर होती है और दिमाग तरो ताजा हो जाता है।



- गाय का घी नाक में डालने से मानसिक शांति मिलती है, याददाश्त तेज होती है।
- गर्भवती माँ को देशी गाय का घी अवश्य खाना चाहिए, इससे गर्भ में पल रहा शिशु बलवान, पुष्ट और बुद्धिमान होता है।
- दो बूंद देशी गाय का घी नाक में सुबह शाम डालने से माइग्रेन दर्द ठीक होता है।
- जिस व्यक्ति को बहुत हार्ट ब्लॉकेज की तकलीफ है और चिकनाई खाने की मना किया गया हो, तो गाय का घी खाएँ हार्ट ब्लॉकेज दूर होता है।
- देशी घी के प्रयोग से नाक से पानी बहना, नाक की हड्डी बढ़ना तथा खर्राटे बंद हो जाते हैं।
- सर्दी जुकाम होने पर गाय का घी थोड़ा गर्म कर 2-2 बूंद दोनों नाक में डालकर सोयें।
- अच्छी नींद के लिए, माइग्रेन और खर्राटे से निजात पाने के लिए भी उपरोक्त विधि अपनाएँ।
- गाय का घी नाक में डालने से पागलपन दूर होता है।
- गाय का घी नाक में डालने से एलर्जी खत्म हो जाती है।
- गाय का घी नाक में डालने से लकवा का रोग में भी उपचार होता है।
- 20-25 ग्राम घी व मिश्री खिलाने से शराब, भांग व गाँजे का नशा कम हो जाता है।
- देशी गाय का घी नाक में डालने से बाल झड़ना समाप्त होकर नए बाल भी आने लगते हैं।
- हाथ पाव में जलन होने पर गाय के घी को तलवों में मालिश करें जलन ठीक होती है।



- हिचकी के न रुकने पर देशी गाय का आधा चम्मच घी खाए, हिचकी स्वयं रुक जाएगी।
- गाय के घी का नियमित सेवन करने से एसिडिटी व कब्ज की शिकायत कम हो जाती है।
- गाय के घी से बल और वीर्य बढ़ता है और शारीरिक व मानसिक ताकत में भी इजाफा होता है।
- गाय के पुराने घी बच्चों को छाती और पीठ पर मालिश करने से कफ की शिकायत दूर हो जाती है।
- अगर अधिक कमजोरी लगे, तो एक गिलास दूध में एक चम्मच गाय का घी और मिश्री डालकर पी लें।
- हथेली और पांव के तलवों में जलन होने पर गाय के घी की मालिश करने से जलन में आराम आयेगा।
- गाय का घी न सिर्फ कैंसर को पैदा होने से रोकता है और इस बीमारी के फैलने को भी आश्चर्यजनक ढंग से रोकता है।
- जिस व्यक्ति को हार्ट अटैक की तकलीफ है और चिकनाई खाने की मनाही है तो गाय का घी खाएं, हृदय मजबूत होता है।
- देसी गाय के घी में कैंसर से लड़ने की अचूक क्षमता होती है। इसके सेवन से स्तन तथा आंत के खतरनाक कैंसर से बचा जा सकता है।
- संभोग के बाद कमजोरी आने पर एक गिलास गर्म दूध में एक चम्मच देसी गाय का घी मिलाकर पी लें। इससे थकान बिल्कुल कम हो जाएगी।
- फफोलो पर गाय का देशी घी लगाने से आराम मिलता है। गाय के घी की छाती पर मालिश करने से बच्चों के बलगम को बाहर निकालने में सहायक होता है।
- सांप के काटने पर 100–150 ग्राम घी पिलायें ऊपर से जितना गुनगुना पानी पिला सके पिलायें जिससे उल्टी और दस्त तो लगे हों ही लेकिन सांप का विष कम हो जायेगा।
- दो बूंद देसी गाय का घी नाक में सुबह शाम डालने से

माइग्रेन दर्द ठीक होता है। सिर दर्द होने पर शरीर में गर्मी लगती हो, तो गाय के घी की पैरो के तलवे पर मालिश करें, सर दर्द ठीक हो जाएगा।

- यह स्मरण रहे कि गाय के घी के सेवन से कॉलेस्ट्रॉल नहीं बढ़ता है। वजन भी नहीं बढ़ता, बल्कि वजन को संतुलित करता है। यानी के कमजोर व्यक्ति का वजन बढ़ता है, मोटे व्यक्ति का मोटापा कम होता है।
- एक चम्मच गाय का शुद्ध घी में एक चम्मच बुरा और 1/4 चम्मच पिसी काली मिर्च इन तीनों को मिलाकर सुबह खाली पेट और रात को सोते समय चाट कर ऊपर से गर्म मीठा दूध पीने से आँखों की ज्योति बढ़ती है।
- गाय के घी को ठंडे जल में फेट लें और फिर घी को पानी से अलग कर लें यह प्रक्रिया लगभग सौ बार करें और इसमें थोड़ा सा कपूर डालकर मिला दें। इस विधि द्वारा प्राप्त घी एक असर कारक औषधि में परिवर्तित हो जाता है जिसे त्वचा संबंधी हर चर्म रोगों में चमत्कारिक मरहम कि तरह से इस्तेमाल कर सकते हैं। यह सोरायमिस के लिए भी कारगर है।
- गाय का घी एक अच्छा (LDC) कोलेस्ट्रॉल है। उच्च कोलेस्ट्रॉल के रोगियों को गाय का घी ही खाना चाहिए। यह एक बहुत अच्छा टॉनिक भी है। अगर आप गाय के घी की कुछ बूंदे दिन में तीन बार, नाक में प्रयोग करेंगे तो यह त्रिदोष (वात पित्त और कफ को संतुलित करता है।)
- घी, छिलका सहित पिसा हुआ काला चना और पिसी शक्कर (बूरा) तीनों को समान मात्रा में मिलाकर लड्डू बाँध लें। प्रातः खाली पेट एक लड्डू खूब चबा-चबाकर खाते हुए एक गिलास मीठा कुनकुना दूध घूँट-घूँट करके पीने से स्त्रियों के प्रदर रोग में आराम होता है, पुरुषों का शरीर मोटा ताजा यानी सुडौल और बलवान बनता है।

## Vedas-Inspired Desi Ghee

From using grass-fed Gir cow's milk to bi-directional churning process, Swarnim Jain's A2 Ghee relies on Ayurvedic Ghee-making process for utmost purity and taste.

## पंचगव्य से बनी अस्थमा की अत्यन्त कारगर दवाई

कहते हैं दमा दम के साथ निकलता है, लेकिन यह बात पंचगव्य थेरेपी ने झुठला दी है। जैन्स काऊ यूरिन थेरेपी हेल्थ क्लीनिक पर पिछले 23 वर्षों से चल रहे अनुसन्धान का परिणाम आ गया है और अस्थमा के लिए दवाई बना ली गई है। 760 अस्थमा मरीजों पर किये गए क्लीनिकल ट्रायल्स के अतिउत्तम परिणाम प्राप्त हुए हैं। 89.14 प्रतिशत इम्प्रूवमेंट मरीजों में देखा गया। हजारों मरीज इसका लाभ उठा चुके हैं।

अस्थमा के ऐसे मरीज, जिन्हें दिन में 15-20 बार इन्हेलर या पफ लेने की आवश्यकता होती थी, 3-4 माह में अस्थमा का जबरदस्त अटैक आता था, ठीक से बोलना और चलना मुश्किल होता था। उन्हें पंचगव्य एवं जड़ी बूटियों से बनी दवाइयों के सेवन से इन्हेलर छूट गया और अस्थमा से निजात पाकर स्वस्थ जीवन जी रहे हैं।

मेडिकल रिव्यू में पाया गया की पंचगव्य थेरेपी से अस्थमा मरीजों की कार्यक्षमता बढ़ गई। पफ एवं दवाइयों की निर्भरता समाप्त हो गई। इसी के साथ आईएलडी, लंग्स फाइब्रोसिस, सीओपीडी, निमोनिया में भी अतिउत्तम परिणाम प्राप्त हुए हैं। विस्तृत जानकारी हेतु पर लॉग इन करें- [cowurine.com](http://cowurine.com)

ज्ञातव्य है की जूनागढ़ एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी ने रिसर्च कर पता लगाया है की गोमूत्र में 5100 तरह के तत्व हैं उसमें से 488 तत्व निकाल लिए गए हैं जिसमें सोना भी है चाँदी भी है ऐसे अनेकों तत्व हैं जो मनुष्य के इम्यून सिस्टम को स्ट्रांग करते हैं। जिससे बार-बार इन्फेक्शन, एलर्जी अटैक आदि नहीं होते हैं।

हाल ही एक शोध से सामने आया की तनाव भरे माहौल, कार्य के अधिक घंटे, उचित आराम नहीं तथा तनाव के कारण शरीर में कुछ ऐसे हार्मोन्स स्त्रावित होते हैं, जिनसे एलर्जी होने का खतरा बढ़ जाता है। ब्यूरो ऑफ हेल्थ इंटेलिजेंस एंड वाइटल स्टेटिस्टिक्स के सर्वेक्षण में एक बात और सामने आई है की गांवों में महिलाओं की होने वाली मौत में पाँच कारणों में एक प्रमुख कारण अस्थमा है।

दमा वंशानुगत, आवास और खाने पीने में बदलाव, गर्भावस्था में सिगरेट पीने से बच्चे में अस्थमा होने की

सम्भावना बढ़ जाती है। पर्यावरण प्रदूषण, सर्दी या फ्लू, तम्बाखू का धुआं, परागकण, बाल या परों वाले जानवर, कॉकरोच या घर के धूल में रहने वाली एलर्जी से दमा भड़कता है। मौसम में परिवर्तन, सक्रमण तथा बुखार, कोल्ड ड्रिक्स, फ्रीज का पानी, फ्रीज में रखे पदार्थ, खाद्य पदार्थ में मिलाये जाने वाले रंग, व केमिकल, परफ्यूम, टेल्कम पाउडर, वाहनों का धुआँ आदि से श्वांसनलियां प्रभावित हो जाती है और दमा के लक्षण दिखने लगते हैं।

अधिक जानकारी के लिए सुबह 9 से शाम 6 बजे के बीच संपर्क करें

**जैन्स काऊ यूरिन थेरेपी क्लिनिक**

165, आरएनटी मार्ग, इंदौर (म.प्र.)

फोन न. 0731-3599100 या 0731-4739100

वेबसाइट- [cowurine.com](http://cowurine.com)



**कैसे पता चलेगा कि आपको अस्थमा है या नहीं?**

धूल और धुएँ से एलर्जी

सांस लेने में तकलीफ

सांस लेते वक्त सीटी जैसी आवाज आना

तेज खांसी का आना

छाती में जकड़न

हर वक्त थकावट महसूस होना

**याद रखें**  
इन लक्षणों को नजरअंदाज न करें, अस्थमा का टेस्ट जिसे पल्मोनरी फंक्शन कहते हैं, जरूर करवाएं।



Explore!

# NEW ZEALAND



Jet Boat Ride



Sky Line



Hole in the Rock

Departure Dates: 2nd & 14th October 2023

**12 NIGHTS / 13 DAYS**

With Our Own Chef 100% Veg / Jain Food



☎ Nilesh Mehta: +91 98400 45533 | +91 72007 45533

🌐 [www.vutravels.com](http://www.vutravels.com) ✉ [nmehta@vutravels.com](mailto:nmehta@vutravels.com) 📱 @VUtoursandtravels

# गव्यसिद्ध ( पंचगव्य विशेषज्ञ ) बनने का सुअवसर

गोमाता एक चलता फिरता चिकित्सालय है और उसमें औषधियों का भंडार है— इसलिए हमने यह अभियान प्रारम्भ किया है की देश के प्रत्येक नगर/गांव में एक-एक ट्रेड गव्यसिद्ध हो जो सभी को पंचगव्य याने दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र की जानकारी और उससे प्रॉडक्ट्स बनाकर या बने प्रोडक्ट्स को जन जन तक उपलब्ध करवा सके। विभिन्न बीमारियों के मरीजों को पंचगव्य थेरेपी की जानकारी दे सकें।

## गाय का घी

गाय का घी विटामिन ए का अच्छा स्रोत है, जो हमारी आंखों के स्वास्थ्य को सुधारता है और रक्त में हिमोग्लोबिन के स्तर को बढ़ाने में मदद करता है। घी में विटामिन डी की अच्छी मात्रा होती है, जो हड्डियों के स्वास्थ्य और कमजोरी को कम करने में मदद करता है। ऑमेगा-3 फैटी एसिड घी में मौजूद होता है, जो हृदय के स्वास्थ्य को सुधारता है और इंसुलिन के संचार को नियंत्रित करने में मदद करता है। इम्यून सिस्टम को मजबूत करने में मदद करता है।

## गाय का दूध

गाय के दूध में मात्रा में उच्च प्रोटीन होता है, जो शरीर के मांसपेशियों, कोशिकाओं, और हार्मोन के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है। गाय के दूध में कैल्शियम की अच्छी मात्रा होती है, जो हड्डियों और दांतों के स्वास्थ्य को बढ़ाता है। गाय के दूध में विटामिन बी12 की अच्छी मात्रा होती है, जो संपूर्ण शरीर के लिए महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से मस्तिष्क और न्यूरोलॉजिकल स्वास्थ्य के लिए। गाय के दूध में विटामिन डी की मात्रा भी पाई जाती है, जो हड्डियों को मजबूत करने, इम्यून सिस्टम को सुधारने और मस्तिष्क स्वास्थ्य को बढ़ाने में मदद करता है। लैक्टोफेरिन गाय के दूध में पाया जाने वाला एक उपयोगी पोषक तत्व है, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने और संक्रमण से लड़ने में मदद करता है।

## गाय के दूध का दही

दही का सेवन पाचन को सुधारता है, बैक्टीरियल इंफेक्शन से बचाता है, और आंत्र में संतुलित आकार की स्थापना करता है। यह आंत्र में शांति प्रदान करता है और अपच को कम करने में मदद करता है। दही शरीर के तरलता को बढ़ाता है और इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाता है, जो रोगों से लड़ने की क्षमता को बढ़ाता है। यह हड्डियों को मजबूत बनाता है और ऑस्टियोपोरोसिस की संभावना को कम करता है।

## गाय का गोमूत्र

गोमूत्र में विटामिन C, विटामिन B12, विटामिन B6, विटामिन E, निकोटिनामाइड, रिबोफ्लाविन, थायामिन, पैन्थेनिक एसिड, जिंक, कॉपर, कैल्शियम, पोटेशियम, और आयरन जैसे महत्वपूर्ण पोषक तत्व विटामिन और मिनरल्स पाए जाते हैं। ये पोषक तत्व शरीर के संपूर्ण विकास, ऊर्जा उत्पादन, हिमोग्लोबिन निर्माण और शरीर के सामान्य कार्यों के लिए महत्वपूर्ण हैं। गोमूत्र एंटीऑक्सीडेंट, एंटीमाइक्रोबियल, एंटी बैक्टीरियल गुणों से भरपूर है।

## गाय का गोबर

गोमय में मिट्टी, मिनरल्स, और धातुओं के तत्व पाए जाते हैं। ये

तत्व पौधों के उद्भव और पोषण में मदद करते हैं। शुद्धिकरण, गोमय धूप, जलायुक्त गोबर साथ ही इससे कवेलू, ईंटे, कागज, दीपक, मूर्ति, आभूषण आदि कई तरह की चीजें बनाई जाती हैं। इसकी राख पानी शुद्धिकरण से लेकर औषधियों में उपयोग की जाती है।

इस हेतु पंचगव्य डिप्लोमा कोर्स प्रारम्भ किया है—

**1. एडवांस डिप्लोमा इन आयुर्वेदा एंड पंचगव्य थेरेपी (ADAPT)**— एक वर्ष का पाठ्यक्रम (ऑनलाइन कोर्स 30 घंटे पश्चात ऑनलाइन/ऑफलाइन प्रैक्टिकल अभ्यास क्रम) प्रवेश हेतु शैक्षणिक योग्यता — बीएएमएस, आयुर्वेदाचार्य, वैद्य या समकक्ष।

**2. एडवांस डिप्लोमा इन इटीग्रेटेड पंचगव्य थेरेपी (ADIPT)**— एक वर्ष का पाठ्यक्रम (ऑनलाइन कोर्स 30 घंटे पश्चात ऑनलाइन/ऑफलाइन प्रैक्टिकल अभ्यास क्रम) प्रवेश हेतु शैक्षणिक योग्यता — किसी भी स्ट्रीम में हेल्थकेयर पेशेवर या ग्रेजुएट

**3. डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी (DPT)**— एक वर्ष का पाठ्यक्रम (ऑनलाइन कोर्स 30 घंटे पश्चात ऑनलाइन/ऑफलाइन प्रैक्टिकल अभ्यास क्रम) प्रवेश हेतु शैक्षणिक योग्यता 10वीं या अधिक

**4. एडवांस डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी (ADPT)**— यह पाठ्यक्रम विशेष रूप से गौशालाओं के लिए है। एक वर्ष का पाठ्यक्रम (ऑनलाइन कोर्स 30 घंटे पश्चात ऑनलाइन/ऑफलाइन प्रैक्टिकल अभ्यास क्रम) प्रवेश हेतु शैक्षणिक योग्यता 10वीं या अधिक।

यह कोर्स कोई भी पुरुष महिला युवा जिनकी उम्र 18 वर्ष से अधिक हो कर सकते हैं। उपरोक्त कोर्स पूर्ण कर परीक्षा में उत्तीर्ण होने के पश्चात आप गव्यसिद्ध कहलायेंगे और आपको बीएसएस (BSS) वोकेशनल कोर्स डिप्लोमा सर्टिफिकेट प्रदान किया जाएगा। BSS भारत सेवक समाज ,योजना आयोग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय विकास एजेंसी है।

इस कोर्स को आप करना चाहते हैं तो हमारी वेबसाइट — [swaarnimfoundation.com](http://swaarnimfoundation.com) पर जाकर फीस एवं जानकारी भरिये और फॉर्म डाउनलोड कर आपके हस्ताक्षर सहित दो पासपोर्ट साइज फोटो, कोर्स का नाम, आपका स्थायी पता एवं पत्र व्यवहार का पता, स्कूल या कॉलेज का पता जहाँ से आपने अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण की है, योग्यता प्रमाण पत्र, मार्क्स शीट, पास होने का वर्ष, बोर्ड या यूनिवर्सिटी का नाम आदि सभी डाक्यूमेंट्स और डिक्लेरेशन आदि सभी पेपर्स निम्न एड्रेस पर कोरियर करिये।

सत्र 1 अगस्त 2023 से प्रारम्भ होगा अतः उसके पूर्व रजिस्ट्रेशन फीस सहित पूर्ण डाक्यूमेंट्स भेजकर प्रवेश प्राप्त करें। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें—

## स्वर्णिम फाउंडेशन

जैस काऊ यूरिन थेरेपी हेल्थ क्लिनिक  
165, आरएनटी मार्ग, इंदौर — 452001  
मो. 9755587887 (समय—सुबह 10 से दोप. 4 बजे तक)  
वेबसाइट— [swaarnimfoundation.com](http://swaarnimfoundation.com)  
ईमेल— [mail@swaarnimfoundation.com](mailto:mail@swaarnimfoundation.com)

# SWAARNIM FOUNDATION INDORE

## बीएसएस (BSS) वोकेशनल कोर्स डिप्लोमा



# पंचगव्य डिप्लोमा गव्यसिद्ध (पंचगव्य विशेषज्ञ)



### पंचगव्य डिप्लोमा करिये और गव्यसिद्ध (पंचगव्य विशेषज्ञ) बनिये

#### एडवांस डिप्लोमा इन आयुर्वेदा एंड पंचगव्य थेरेपी (ADAPT)

एक वर्ष का पाठ्यक्रम (ऑनलाइन कोर्स 30 घंटे पश्चात ऑनलाइन/ऑफलाइन प्रैक्टिकल अभ्यास क्रम) प्रवेश हेतु शैक्षणिक योग्यता-बीएएमएस, आयुर्वेदाचार्य, वैद्य या समकक्ष

#### एडवांस डिप्लोमा इन इंटीग्रेटेड पंचगव्य थेरेपी (ADIPT)

एक वर्ष का पाठ्यक्रम (ऑनलाइन कोर्स 30 घंटे पश्चात ऑनलाइन / ऑफलाइन प्रैक्टिकल अभ्यास क्रम) प्रवेश हेतु शैक्षणिक योग्यता-किसी भी स्ट्रीम में हेल्थकेयर पेशेवर या ग्रेजुएट



#### डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी (DPT)

एक वर्ष का पाठ्यक्रम (ऑनलाइन कोर्स 30 घंटे पश्चात ऑनलाइन / ऑफलाइन प्रैक्टिकल अभ्यास क्रम) प्रवेश हेतु शैक्षणिक योग्यता 10 वीं या अधिक

#### एडवांस डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी (ADPT)

यह पाठ्यक्रम विशेष रूप से गौशालाओं के लिए है

एक वर्ष का पाठ्यक्रम (ऑनलाइन कोर्स 30 घंटे पश्चात ऑनलाइन / ऑफलाइन प्रैक्टिकल अभ्यास क्रम) प्रवेश हेतु शैक्षणिक योग्यता 10 वीं या अधिक

यह कोर्स कोई भी पुरुष महिला युवा जिनकी उम्र 18 वर्ष से अधिक हो कर सकते हैं। उपरोक्त कोर्स होने के पश्चात आपको बीएसएस वोकेशनल कोर्स डिप्लोमा सर्टिफिकेट प्रदान किया जाएगा। BSS भारत सेवक समाज, योजना आयोग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय विकास एजेंसी है।

इस कोर्स को आप करना चाहते है तो हमारी वेबसाइट - [swaarnimfoundation.com](http://swaarnimfoundation.com) पर जाकर फीस एवं डिटेल् भरिये और रजिस्ट्रेशन फॉर्म डाउनलोड कर आपके हस्ताक्षर सहित दो पासपोर्ट साइज फोटो, कोर्स का नाम, आपका स्थायी पता एवं पत्र व्यवहार का पता, स्कूल या कॉलेज का पता जहाँ से आपने अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण की है, योग्यता प्रमाण पत्र, मार्क्सशीट, पास होने का वर्ष, बोर्ड या यूनिवर्सिटी का नाम आदि सभी डाक्यूमेंट्स और डिक्लेरेशन आदि सभी पेपर्स निम्न एड्रेस पर कोरियर करिये।

सत्र 1 अगस्त 2023 से प्रारम्भ होगा अतः उसके पूर्व रजिस्ट्रेशन फीस सहित पूर्ण डाक्यूमेंट्स भेजकर प्रवेश प्राप्त करें।

**Swaarnim**  
Naturscience Limited  
फार्मसी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

## स्वर्णिम फाउंडेशन

**JAIN'S**  
COW URINE THERAPY  
क्लिनिक

165, आरएनटी मार्ग, इंदौर - 452001 | ☎/📞 9755587887 | समय - सुबह 10 से दोपहर 4 बजे तक

वेबसाइट- [swaarnimfoundation.com](http://swaarnimfoundation.com), ईमेल- [mail@swaarnimfoundation.com](mailto:mail@swaarnimfoundation.com)

# राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस पर पंचगव्य चिकित्सक सम्मानित

पंचगव्य थैरेपी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य देती है

इंदौर, 30 जून । राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस के उपलक्ष्य में पूर्व संध्या पर स्वर्णिम फ़ाउंडेशन द्वारा पंचगव्य चिकित्सकों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। बीएएमएस डॉ गौरव पंजारे, डॉ वर्षा दुबे, डॉ ज्योति महावर, डॉ संध्या पंजारे, डॉ. ईश्वर धाकड और डॉ शादाब अहमद को माला, गिफ़्ट और प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया गया । सभी आयुर्वेद डॉक्टर पिछले कई वर्षों से पंचगव्य थैरेपी द्वारा सैकड़ों मरीजों का सफल उपचार कर रहे हैं। इस अवसर पर समाजसेवी वीरेन्द्रकुमार जैन एवं रेखा जैन ने कहा कि देश के स्वास्थ्य के रक्षक भारतीय चिकित्सा पद्धति को प्रचारित कर देशवासियों के लिए स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने के लिए अपने समय, मेहनत और ज्ञान की भूमिका निभा रहे हैं। डॉक्टरों ने अपने सम्मान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि पंचगव्य थैरेपी मनुष्य को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य प्रदान करती है। फ़ाउंडेशन के अध्यक्ष विवेक शारदा जैन ने स्वागत भाषण दिया। विशाल जोशी ने आभार व्यक्त किया।



# Panoramic Vietnam



7 Nights  
8 Days



**Departure Dates:**  
**September 29th & October 7th**

With Our Own Chef 100% Veg / Jain Food



☎ Nilesh Mehta: +91 98400 45533 | +91 72007 45533

🌐 [www.vutravels.com](http://www.vutravels.com) ✉ [nmehta@vutravels.com](mailto:nmehta@vutravels.com) 📱 @VUtoursandtravels